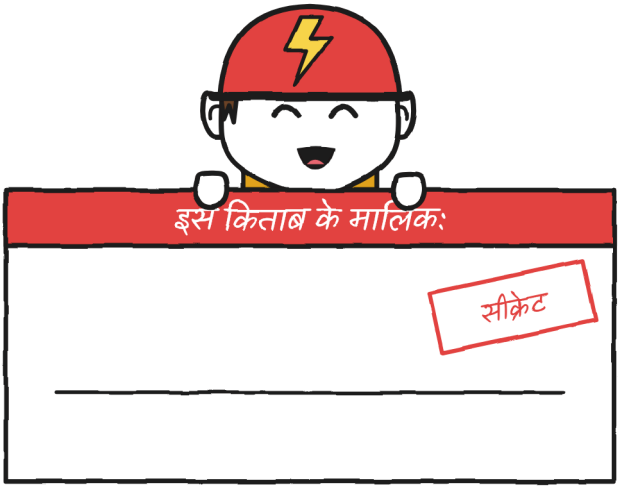


और उसे पहले मैं पढ़ती हूँ। –ज.

अगर यह तुम्हें मिल जाए, तो लौटा देना। प्लीज़।

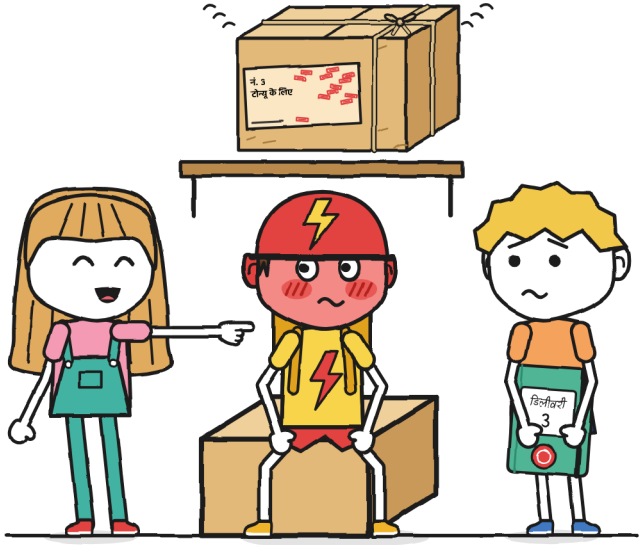
सिर्फ़ कहानी में

यह मुहर उसे चिह्नित करती है जो सिर्फ़ कहानी में होता है: असली पार्सल उड़कर वापस नहीं आते। असली साइकिल हो, तो आख़िरी पन्ना देखो। –ज.

नामुमकिन डिलीवरी · 3

वापस भेजिए, प्लीज़

LinguAula



(गुनी की डायरी)

साइज़ XL · सचित्र उपन्यास · 13+

नामुमकिन डिलीवरी · 3
वापस भेजिए, प्लीज़

सीरीज़ की तीसरी किताब। पिछली दोनों: “यह पार्सल काटता है” और “बादल गरजने से पहले न खोलें”।

लेखन और चित्र: LinguAula

हिन्दी संस्करण: LinguAula

साइज़ XL · सचित्र उपन्यास · 13+

पहला संस्करण: 2026

© 2026 LinguAula · info@linguaula.com

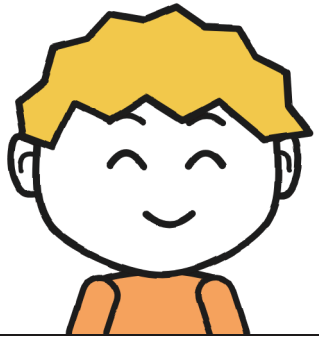
कक्षा और घर के लिए खुलकर फ़ोटोकॉपी कर सकते हैं।

फ़ॉन्ट: Andika, Patrick Hand, Caveat, Courier Prime, Kalam, Dekko और Hind (SIL OFL लाइसेंस)।

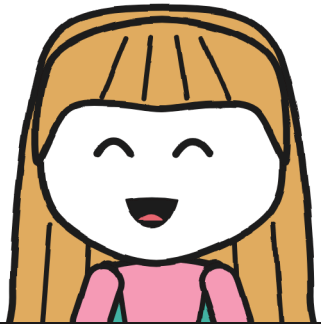
हर अध्याय का अभ्यास
linguaula.com *पर करो*

इस किताब को लिखने के दौरान किसी भी डिलीवरी वाले को चोट नहीं आई। हाँ, एक लाल जूरूर पड़ गया। —ज.

कौन कौन है



गुनी। शनिवार का डिलीवरी बॉय। ऐसी चीज़ों के चित्र बनाता है जो किसी ने माँगी नहीं। यह डायरी उसी की है।



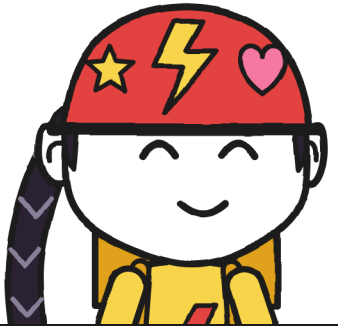
जूलिता। हरे रंग से लिखती है और "ज." से दस्तख़त करती है। उसे हमेशा पता होता है कि मदद कैसे करनी है। यही तो समस्या है।



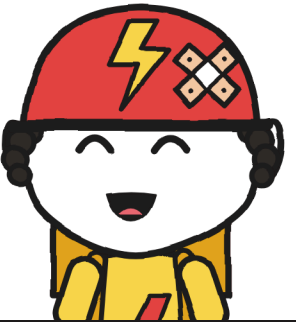
टोन्यो। साइकिल पर "बिजली" के लिए डिलीवरी करता है। दस मिनट में या मुफ़्त। हिस्सों में लाल होता है।



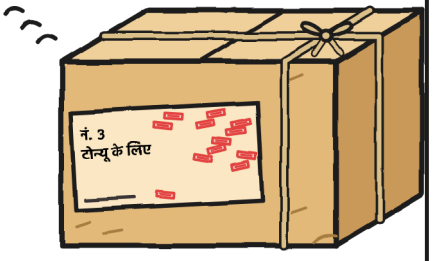
मारा। नामुमकिन डिलीवरी की मालकिन। जादूगरनी वाली टोपी पहनती है। जितना बताती है, उससे ज़्यादा जानती है।



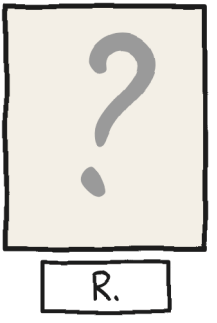
ज़ोई। "बिजली" वाली। सबसे तेज़। सबके निकनेम वही रखती है।



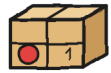
ब्रूनो। "बिजली" वाला। एक बार पंक्चर हुआ था। दो साल पहले।



पार्सल नं. 3। हिलाओ तो बजता है। लेबल पर बस एक नाम लिखा है।



R. की तरफ़ से वे पार्सल भेजे जाते हैं जिन्हें कोई नहीं पहुँचा पाता। कोई उसका नाम नहीं लेता।



अध्याय 1

टिन-टिन

टिन-टिन।

वह बहुत छोटी-सी आवाज़ थी, उन आवाज़ों में से जो तभी सुनाई देती हैं जब बाक़ी सब चुप हो चुका हो: प्याली से टकराती चम्मच, किसी खिलौना साइकिल की बेल। वह वापस आए पार्सलों की शेल्फ़ से आई थी, और मारा की दुकान में हम जो चार बचे थे, इतने स्थिर हो गए कि मुहर से गिरती चिंगारी भी सुनाई दे जाती।

तूफ़ान को गए काफ़ी देर हो चुकी थी। जूलिता अब भी मेरे नीले स्टूल पर चढ़ी थी, हरा मार्कर ऊपर उठाए, और कटे हुए 19 के बगल में ताज़ा लिखा 18 चमक रहा था। मारा का एक हाथ आधे रास्ते में रुका था, शटर की ओर बढ़ता हुआ। मैं, जिसे अच्छे से अच्छे पलों में भी नहीं पता होता कि हाथों का क्या करूँ, मैंने हाथों से कुछ नहीं किया।

वह नं. 3 था। और टोन्यो, जो "बिजली" के लिए दस मिनट में या मुफ़्त डिलीवरी करता है, अपने हेलमेट के रंग का हो गया।

डायरी नई थी। नं. 2 एक ही तूफ़ान में भर गई थी; यह हरी है, एक कोने में दुकान की मुहर लगी है, और इसे शुरु मुझे करना था, पूरी रस्म के साथ: पहले पन्ने पर शीर्षक और एक नया शब्द।

डिलीवरी डायरी 3 · गुनी की। सीक्रेट।

"सीक्रेट" का मतलब है कि इसे पहले मैं पढ़ती हूँ। और किसी को बताती नहीं। –ज.

मैंने जीभ बाहर निकालकर शीर्षक लिखा और रबर लेने चला गया, कि कहीं टेढ़ा न रह गया हो। जब लौटा, तो उसे जूलिता पहले ही शुरू कर चुकी थी।

"तुम्हारी मदद के लिए मैंने इसे शुरू कर दिया," उसने कहा। "शुक्रिया नहीं चाहिए।"

मैंने उससे मदद नहीं माँगी थी। जूलिता के साथ इससे फ़र्क़ नहीं पड़ता।

बाक़ी बातें, कि कभी कोई ऐसा पढ़े जो जूलिता नहीं है। दुकान का नाम "नामुमकिन डिलीवरी" है और वह मारा की है, जो जादूगरनी हैं, बैंगनी टोपी पहनती हैं, और जिनकी मुहर लगते ही चिंगारियाँ छोड़ती है, जिनसे बुझी मोमबत्ती की महक आती है। बाईं तरफ़ की शेल्फ़ पर वे वापस आए पार्सल रखती हैं: वे पार्सल जिन्हें कोई पहुँचा नहीं पाया। उनका एक ही नियम है: पाने वाला अगर लेबल पर कभी न मिटने वाली स्याही से दस्तख़त न करे, तो सुबह होते ही पार्सल उड़कर अपनी शेल्फ़ पर लौट आता है, खाने के वक़्त पर लौटती बिल्ली जितना पाबंद। वे बीस थे, और उन्हें हमेशा एक ही इंसान भेजता है, R., जिसके बारे में नीली डायरी में मेरे पास पहले ही छह सुराग थे। जूलिता और मैंने दो पहुँचा दिए हैं, ड्रैगन का एक अंडा और पैरों वाले कुछ बीज जो दौड़ पड़े थे, और दीवार पर, उसकी लिखावट में, हरे रंग से लिखा है: बाक़ी 18।

जूलिता हरे नोटों वाली है। मैं गुनी हूँ, मोहल्ले में नया: मेरा लगभग सारा सामान अब भी डिब्बों में है। और टोन्यो "बिजली" का डिलीवरी बॉय है, पीले बैग वाला, जो शनिवार को हमारे साथ सज़ा काटता है और जिसकी तूफ़ान के बाद से दुकान में अपनी जगह है: स्टूलों के पास उलटा रखा डिलीवरी का एक बक्सा। मारा ने उसे बिना कोई सफ़ाई दिए वहाँ रख दिया था। "फ़िलहाल," उन्होंने कहा। किसी की हिम्मत नहीं हुई पूछने की कि फ़िलहाल कब तक चलता है।

नं. 3 ऊपर वाली शेल्फ़ पर था, उन दो खाली जगहों के बगल में जो अंडे और बीजों ने छोड़ी थीं, लेबल सामने की ओर। मैं उसे पढ़ने गया, खड़े-खड़े और बिना छुए।



टाइपराइटर से लिखी तीन पंक्तियाँ: नं. 3। टोन्यू के लिए। और सबसे नीचे, प्रेषक: R. नाम और आख़िरी पंक्ति के बीच काग़ज़ की एक पूरी ख़ाली पट्टी थी। चारों ओर “वापस आया” की बारह मुहरें। मैंने उन्हें गिना।

जूलिता एक छलाँग में स्टूल से उतरी और मेरे बगल में आ खड़ी हुई। उसने ज़ोर से पढ़ा:

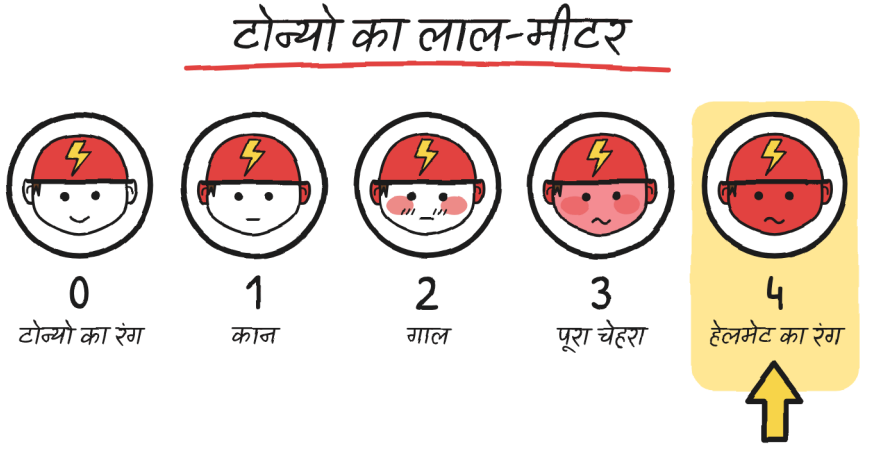
“टो...”

और मुँह बंद कर लिया।

जूलिता किसी शब्द के बीच में कभी चुप नहीं होती। मैंने टोन्यो की तरफ़ देखा और समझ गया क्यों।

मैंने उसे आधा पढ़ा। बाक़ी आधा निगल गई। –ज.

कुछ लोग अचानक लाल हो जाते हैं। टोन्यो नहीं: टोन्यो हिस्सों में लाल होता है। पहले कान। फिर गाल। फिर पूरा चेहरा, हेलमेट के पट्टे तक, और अभी एक आख़िरी सीढ़ी बाक़ी थी, सबसे बुरी वाली, जब चेहरा और हेलमेट एक-दूसरे से अलग पहचाने नहीं जाते। नं. 2 के थरथर-मीटर के बाद से मुझसे ऐसा कुछ नहीं देखा जाता जो बदल रहा हो और जिस पर पैमाना न हो, इसलिए मैंने उसे लिख लिया।



जूलिता बाक़ी पढ़ने के लिए पार्सल की ओर हाथ बढ़ाने लगी।

"वह पार्सल इंतज़ार कर सकता है," टोन्यो ने बहुत जल्दी-जल्दी कहा। "सालों से इंतज़ार ही कर रहा है, है न? तो एक दिन और। या दस। 'बिजली' को कोई जल्दी नहीं है।"

मैंने "बिजली" को पहली बार यह कहते सुना था।

"आज रात कुछ नहीं खुलेगा," मारा ने कहा। "और शेल्फ़ को बिना इजाज़त कोई नहीं छुएगा।"

जूलिता का हाथ हवा में ही रुक गया, लेबल से एक उँगली दूर। किसी ने कुछ नहीं छुआ। और तभी वह फिर बजा।

टिन-टिन।

"वह दरवाज़ा था!" जूलिता ने कहा, एक ऐसी आवाज़ में जो मैंने उसकी कभी नहीं सुनी थी: ज़रूरत से ज़्यादा ऊँची और ज़रूरत से ज़्यादा जल्दी।

दरवाज़ा तब से बंद था जब वेरा गई थीं।

जब मुझे कुछ समझ नहीं आता, मैं एक लिस्ट बनाता हूँ। टिन-टिन के संदिग्ध:

1. दरवाज़ा। (जूलिता का सुझाव। बंद, हवा नहीं, और धक्का देने वाला कोई नहीं।)
2. टोन्यो की साइकिल, फ़ुटपाथ पर, "बिजली" की बेल के साथ। (ट्रिंग करती है, टिन-टिन नहीं। पर है तो बेल।)
3. रबर का मेंढक। (जूलिता ने उसे उसी पल बेक़सूर घोषित कर दिया। कहती है कि वह उसे जानती है।)
4. नं. 3।

मैंने नं. 3 को सबसे आख़िर में रखा, शिष्टाचार के नाते।



मैं जाँचने फ़ुटपाथ पर निकला। रास्ते में मेंढक भी उठा लिया, क्योंकि संदिग्ध से दूर से पूछताछ नहीं होती।

बारिश रुक चुकी थी। सड़क से भीगे डामर की महक आ रही थी और हर गड्ढे में एक लैंपपोस्ट बैठा था। मैंने दरवाज़ा खोला और बंद किया: चर्रर्र। टोन्यो की साइकिल की बेल बजाई: ट्रिंग! मैंने मेंढक दबाया: पीं।

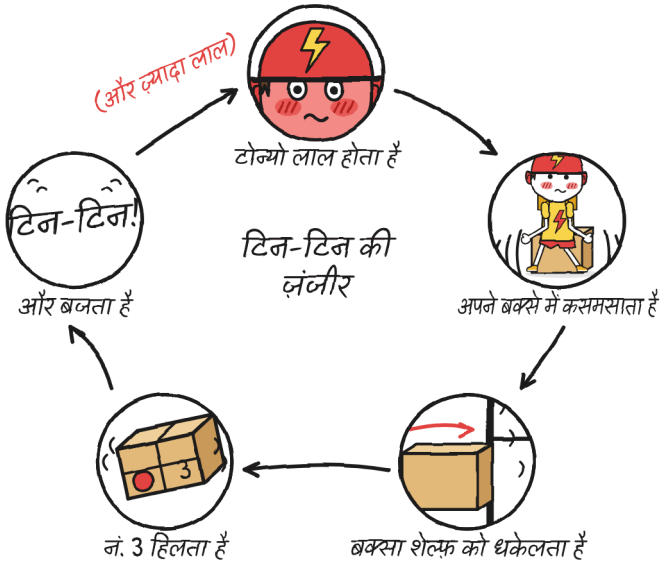
शीशे के उस पार जूलिता उँगली हिलाकर मना कर रही थी। हर आवाज़ पर वही, इधर से उधर, किसी गाड़ी के वाइपर की तरह। इनमें से कोई नहीं था।

मैं वापस अंदर गया और मेंढक को काउंटर पर रख दिया। टोन्यो ने मुझे उसकी तरफ़ देखते देखा और अपने बक्से में कसमसाया।

टिन-टिन।

मैं झुका। टोन्यो का बक्सा शेल्फ़ के पाये से टिका हुआ था।

मैंने उसे वहीं बैठे-बैठे, घुटनों के बल, बना डाला, और जो बना वह एक गोला था, क्योंकि जितना घुमाकर देखता, यह नहीं मिलता था कि शुरु कहाँ से होता है।



जादू नहीं था। टोन्यो था। नं. 3 के अंदर कुछ है जो हिलाने पर बजता है।

मेरी तरह। –ज.

टोन्यो ने मेरी नज़र का पीछा किया, शेल्फ़ के पाये तक, फिर अपने बक्से को देखा, और तय किया कि वह बिना हिले-डुले बैठा रहेगा।

यह फ़ैसला उतनी देर चला जितनी देर खिंची हुई रबर-बैंड चलती है।

स्थिर। फिर और स्थिर: इतना स्थिर कि उसके सोचने की आवाज़ सुनाई देती थी, "स्थिर", और कनपटी से एक बूँद नीचे सरकती हुई। जूलिता पूरे एक मिनट से चुप थी, जो उसके लिए पानी के नीचे साँस रोकने जैसा है, और देर-सवेर आदमी वही लेकर ऊपर आता है जो मुँह के सबसे पास हो।

"टोन्यू कौन है?"

टोन्यो उछल पड़ा। बक्से ने पाये को धक्का दिया, शेल्फ़ काँपी और नं. 3 बोल उठा, टिन-टिन! उतने ज़ोर से, जितने के हक़दार किसी टिन-टिन को नहीं होना चाहिए। मारा ने छत की तरफ़ देखा, जैसे कोई तीन तक गिन रहा हो।

"यह तो बस एक सवाल था," जूलिता ने कहा। "सवाल शेल्फ़ को धक्का नहीं देते।"

यह वाला देता है।



"वह मैं था," टोन्यो ने अपने जूतों को देखते हुए कहा। "जब मैं छोटा था।"

उसने इतनी धीरे से कहा कि मुझसे ज़्यादा मेंढक ने सुना, जो काउंटर पर उसके मुझसे ज़्यादा पास था।

जूलिता ने मुँह खोला। मैंने उसके सवालों को क़तार में खड़े देखा, रविवार की सुबह बेकरी के बाहर लगी क़तार की तरह, पहला सवाल हाथ में पैसे लिए तैयार। फिर उसने टोन्यो को देखा, जो अब भी अपने जूतों को ही देख रहा था, और मुँह बंद कर लिया।

"मैं और नहीं पूछ रही," उसने कहा।

उसे मुश्किल हुई। उसके पैर से साफ़ दिखा: टक, टक, टक, दुकान के फ़र्श पर।

सवाल जो मैंने नहीं पूछे: नौ। मैंने उन्हें लिख रखा है। –ज.

"और तुमने इसे उसे कभी क्यों नहीं दिया?" मैंने मारा से पूछा।

"बारह बार मैं इसे ले गई हूँ।" किसी को मुहरें गिनने की ज़रूरत नहीं पड़ी। "लेबल देखो: न सड़क, न मकान का नंबर, न उपनाम। मुझे जितने टोन्यू मिले, सबके पास गई।"

उन्होंने उन्हें याद से, उँगलियों पर गिनाया, और मैं उन्हें सुनते-सुनते बनाता गया। एक कैनरी, जिसका नाम सचमुच टोन्यू था और जिसने लेबल पर पैर रख दिया: नहीं चला। दादा अंतोनियो, 71 साल के, जिन्होंने चश्मा लगाया, काग़ज़ दो बार पढ़ा और बोले "काश मैं होता," उसे ऐसे देखते हुए जैसे कोई दुकान की शोकेस देखता है। नहर की एक

नाव, जिसके किनारे पर नाम पेंट किया हुआ था, और जिसने भी दस्तख़त नहीं किए, क्योंकि उसके हाथ नहीं हैं।

मारा के टोन्यू



1. *एक कैनरी।*
(लेबल पर पैर रख दिया। नहीं चलेगा।)

2. *दादा अंतोनियो, 71 साल।*
("काश मैं होता।")

3. *नहर की एक नाव।*
(उसके हाथ नहीं हैं।)

"और टोन्यो?" जूलिता ने पूछा।

"पिछली बार जब मैंने कोशिश की थी, तब मैं उसे जानती नहीं थी," मारा ने कहा और उसकी तरफ़ देखा। "और किसी ने मुझे बताया नहीं कि बचपन में उसे क्या कहते थे।"

मारा ने काउंटर के नीचे से एक बैंगनी कपड़ा निकाला और नं. 3 को ढक दिया, जैसे कोई तोते के पिंजरे को ढकता है ताकि वह सो जाए। फिर उन्होंने टोन्यो से कहा कि वह एक पल को उठे, और उसका बक्सा शेल्फ़ से दो बित्ते दूर खिसका दिया।

"ऐसे। अब तुम जितना चाहो हिल सकते हो।"

टोन्यो जा सकता था। साइकिल दरवाज़े पर खड़ी थी: दस मिनट में वह मोहल्ले के दूसरे छोर पर होता। वह फिर बैठ गया।

मुझे नहीं पता क्यों। फिर भी लिख रहा हूँ।

और चूँकि उसके बक्से में बैकरेस्ट नहीं है, मैंने उसके लिए एक बना दिया: ऊँचा, ज़रा-सा मुड़ा हुआ, एक छोटे गद्दे के साथ, पेंसिल से और बिंदुओं वाली रेखा में, और नीचे छोटे अक्षरों में: "बैकरेस्ट (मेरा आइडिया)"।

तुमसे किसी ने बैकरेस्ट नहीं माँगा था। –ज.



दुकान बंद करते समय टोन्यो सबसे आख़िर में रुका और अपने हेलमेट का पट्टा इतनी धीरे कसने लगा कि "बिजली" में यह गंभीर अपराध माना जाता। मारा एक-एक करके बत्तियाँ बुझा रही थीं; बैंगनी कपड़ा अब भी पार्सल पर पड़ा था, ऊपर वाली शेल्फ़ पर।

"मारा। कल मैं इस बारे में बात करने आऊँगा। पर अकेले में।"

"ये दोनों दुकान के हैं," मारा ने मुड़े बिना कहा।

टोन्यो ने हमारी तरफ़ देखा। पहले जूलिता को; फिर मुझे। मैं स्टूल पर सीधा हो गया।

"ये दोनों ठीक हैं," उसने कहा। "पर 'बिजली' का कोई नहीं।"

वह बाहर निकला और गड्ढों के बीच दूर होता गया, साइकिल को हाथ से पकड़े।

टिन-टिन को मालिक मिल गया था। अब यह जानना बाक़ी था कि मालिक उसे चाहता है या नहीं।

उसकी मदद कैसे करनी है, यह मुझे पहले से पता है। –ज.

मुझे इसी बात की चिंता है।

एक कहानी, छह साइज़

यह किताब छह साइज़ में, 3 से 16 साल तक के लिए, और 20 से ज़्यादा भाषाओं में मिलती है। XXS, XS, S, M और L कहानी को पन्ना-दर-पन्ना, उन्हीं चित्रों के साथ सुनाती हैं, हर बार थोड़े और ब्योरों के साथ; XL उपन्यास है: वही कहानी, बस उसमें वह सब कहने की जगह है जो गुनी सोचता तो है, पर कहता नहीं।

CEFR के स्तर केवल मार्गदर्शन के लिए हैं। XXS: pre-A1 · XS: A1 · S: A2 · M: B1 · L: B2 · XL: B2–C1।

सबका अपना साइज़। टिन-टिन वही। —ज.

परिवारों और शिक्षकों के लिए

हर अध्याय का अभ्यास linguaula.com *पर करो (L साइज़ के अभ्यासों के साथ)*